(२) पद्मपुराण

यह पुराण परिमाण में स्कन्दपुराण को छोड़कर अद्वितीय है। इसके श्लोकों की संख्या ५०,००० बतलायी जाती है। इस प्रकार से इसे महाभारत का आधा और भागवतपुराण से तिगुना परिमाण में समझना चाहिए। इसके दो संस्करण उपलब्ध होते हैं। (१) बंगाली संस्करण और (२) देवनागरी संस्करण। बंगाली संस्करण तो अभी तक अप्रकाशित हस्तलिखित प्रतियों में पड़ा है। देवनागरी संस्करण आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली में चार भागों में प्रकाशित हुआ है। आनन्दाश्रम संस्करण में छः खण्ड हैं; (१) आदि (२) भूमि (३) ब्रह्मा (४) पाताल (५) सृष्टि और (६) उत्तर खण्ड। परन्तु भूमिखण्ड (अध्याय १२५—४८।४९ से ही पता चलता है कि छः खण्डों की कल्पना पीछे की है। मूल में पाँच ही खण्ड थे जो बंगाली संस्करण में आज भी उपलब्ध होते हैं।

प्रथमं सृष्टिखण्डं हि, भूमिखंडं द्वितीयकम्।
तृतीयं स्वर्गखंडं च, पातालञ्च चतुर्थकम्॥
पंचमं चोत्तरं खंडं, सर्वपापप्रणाशनम्।

अब इहीं मूलभूत पाँच खंडों का वर्णन क्रमशः किया जा रहा है।

(१) **सृष्टि-खण्ड**—इसमें ८२ अध्याय हैं। इसके प्रथम अध्याय (श्लोक ५५—६०) से पता चलता है इसमें ५५,००० श्लोक थे तथा यह पुराण पाँच पर्वों में विभक्त था—(१) पौष्कर पर्व—जिसमें देवता, मुनि, पितर तथा मनुष्यों की ९ प्रकार की सृष्टि का वर्णन है। (२) तीर्थपर्व—जिसमें पर्वत, द्वीप तथा सप्त सागर का वर्णन है। (३) तृतीय पर्व—जिसमें अधिक दक्षिणा देनेवाले राजाओं का वर्णन है। (४) राजाओं का वंशानुकीर्तन है। (५) मोक्ष पर्व में मोक्ष तथा उसके साधन का वर्णन किया गया है। इस खंड में समुद्र-मंथन, पृथु की उत्पत्ति, पुष्कर तीर्थ के निवासियों का धर्मकथन, वृत्रासुर-संग्राम, वामनावतार, मार्कण्डेय की उत्पत्ति, कार्तिकेय की उत्पत्ति, रामचरित, तारकासुरवध आदि कथाएँ विस्तार के साथ दी गयी हैं।

(२) **भूमि-खण्ड**—इस खंड के आरम्भ में शिवकर्मा नामक ब्राह्मण को पितृभक्ति के द्वारा स्वर्गलोक की प्राप्ति का वर्णन है। राजा पृथु के जन्म और चरित्र का वर्णन है। किसी छद्मवेशधारी पुरुष के द्वारा जैनधर्म का वर्णन सुन कर वेन उन्मार्गगामी बन जाता है। तब सप्तर्षियों के द्वारा उसकी भुजाओं का मन्थन होता है जिससे पृथु की उत्पत्ति होती है। नाना प्रकार के नैमित्तिक तथा आभ्युदयिक दोनों के अनन्तर सती सुकला की पातिव्रतसूचक कथा बड़े विस्तार के साथ दी गयी है। ययाति और मातलि के अध्यात्म-विषयक

Scanned with CamScanner

सम्वाद में पाप और पुण्य के फलों का वर्णन और विष्णुभक्ति की प्रशंसा की गयी है। महर्षि च्यवन की कथा भी बड़े विस्तार के साथ दी गयी है। यह पद्मपुराण विष्णु भक्ति का प्रधान ग्रंथ है। परन्तु इसमें अन्य देवताओं के प्रति अनुदार भावों का प्रदर्शन कहीं भी नहीं किया गया है। शिव और विष्णु की एकता के प्रतिपादक ये श्लोक कितने महत्त्वपूर्ण हैं :—

शैवं च वैष्णवं लोकमेकरूपं नरोत्तम।
द्वयोश्चाप्यन्तरं नास्ति एकरूपं महात्मनोः॥
शिवाय विष्णुरूपाय विष्णवे शिवरूपिणे।
शिवस्य हृदये विष्णुःविष्णोश्च हृदये शिवः॥
एकमूर्तिस्त्रयो देवाः ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
त्रयाणामन्तरं नास्ति, गुणभेदाः प्रकीर्तिता॥

(३) **स्वर्ग-खण्ड**—इस खण्ड में देवता, गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष आदि के लोकों का विस्तृत वर्णन है। इसी खण्ड में शकुन्तलोपाख्यान है जो महाभारत के शकुन्तलोपाख्यान से सर्वथा भिन्न है; परन्तु कालिदास के 'अभिज्ञान-शाकुन्तल' से बिल्कुल मिलता-जुलता है। इससे कुछ विद्वानों का कहना है कि कालिदास ने अपने सुप्रसिद्ध नाटक को कथावस्तु महाभारत से न लेकर इसी पुराण से ली है। 'विक्रमोर्वशी' के सम्बन्ध में भी यही बात है।

(४) **पाताल-खण्ड**—इसमें नागलोक का विशेष रूप से वर्णन है। प्रसंगतः रावण के उल्लेख होने से पूरे रामायण की कथा इसमें कही गयी है। इसमें विशेष बात यह है कि कालिदास के द्वारा 'रघुवंश' में वर्णित राम की कथा से यह कथा मिलती-जुलती है। रावण के वध के अनन्तर सीता-परित्याग तथा रामाश्वमेध की कथा भी इसमें सम्मिलित है। यह कथा भवभूति के 'उत्तर रामचरित' में वर्णित रामचरित से बहुत-कुछ मिलती है। इस पुराण में व्यासजी के द्वारा १८ पुराणों के रचे जाने की बात उल्लिखित है जिसमें भागवत पुराण की विशेष रूप से महिमा गायी गयी है।

(५) **उत्तर-खण्ड**—इस पाँचवें खंड में विविध प्रकार के आख्यानों का संग्रह है। इसमें विष्णुभक्ति की विशेष रूप के प्रशंसा की गयी है। क्रियायोग-सार' नामक इसका एक परिशिष्ट अंश भी है जिसमें यह दिखलाया गया है कि विष्णु भगवान् व्रतों तथा तीर्थों के सेवन से विशेषरूप से प्रसन्न होते हैं।

पद्मपुराण विष्णुभक्ति का प्रतिपादक सबसे बड़ा पुराण है। भगवान् का नामकीर्तन किस प्रकार सुचारु रूप से किया जा सकता है? कितने नामापराध हैं? आदि प्रश्नों का उत्तर इस पुराण में बड़ी प्रामाणिकता से दिया गया है। इसीलिए अवान्तर-कालीन वैष्णव-सम्प्रदाय के ग्रन्थों ने इसका महत्त्व बहुत

Scanned with CamScanner

अधिक माना है। साहित्यिक दृष्टि से भी यह बहुत सुन्दर है। पुराणों में तो अनुष्टुप् का ही साम्राज्य रहता है; परन्तु इस पुराण में अनुष्टुप् के अतिरिक्त अन्य बड़े छन्दों का भी समावेश है। भगवान् की स्तुति के ये दोनों पद्य कितने सुन्दर हैं :—

संसारसागरमतीव गभीरपारं,
दुःखोर्मिभिर्विविधमोहमयैस्तरंगैः।
सम्पूर्णमस्ति निजदोषगुणैस्तु प्राप्तं,
तस्मात् समुद्धर जनार्दन मां सुदीनम् ॥
कर्माम्बुदे महति गर्जति वर्षतीव,
विद्युल्लतोल्लसति पातकसंचयैर्मे।
मोहान्धकारपटलैर्मयि नष्टदृष्टे,
दीनस्य तस्य मधुसूदन देहि हस्तम् ॥

Scanned with CamScanner